कर्ज़ की अदाएगी की एहमियत

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की एक आदमी लोगो को कर्ज़ा दिया करता था, फिर वो अपने कारिन्दे को जिसे वो कर्ज़ा वुसूल करने के लिए भेजता ये समझा देता की अगर तू किसी गरीब कर्ज़दार के पास पहुंचे तो उस्को माफ कर देना, शायद की अल्लाह हमारे साथ माफी का मामला करे. आपﷺ ने फरमाया- ये शख्स जब अल्लाह से मिला तो अल्लाह ने उस्के साथ माफी का मामला किया.

_बुखारी मुस्लीम, रिवायत का खुलासा.

2] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- जिस शख्स को ये बात पसन्द हो की अल्लाह उसे कयामत के दिन गम और घुटन से बचाए तो उसे चाहिए की गरीब कर्ज़दार को मुहलत दे या कर्ज़ का बोज उस्के उपर से उतार दे.

_मुस्लिम, रिवायत का खुलासा | रावी अबू कतादा रदी.

3] रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में नमाज़ पढाने के लिए एक जनाजा लाया गया, तो आप ﷺ ने पूछा की इस मरने वाले पर कोई कर्ज़ तो नहीं है? लोगो ने कहा हा इसपर कर्ज़ है. आप ﷺ ने पूछा की इसने कुछ माल छोडा है की जिस्से ये कर्ज़ अदा किया जा सके? लोगो ने कहा नहीं तो आप ﷺ ने फरमाया- की तुम लोग इस्की जनाजे की नमाज़ पढलो (में नहीं पढूगा) हजरत अली रदी, ने ये सूरते हाल देखकर कहा ऐ अल्लाह के रसूल में इस्के कर्ज़ को अदा करने की जिम्मेंदारी लेता हू तब आप ﷺ आगे बढे और नमाज़ पढाई, और फरमाया (जैसा की एक दूसरी हदीस में है) ऐ अली! अल्लाह तुझे आग से बचाए और तेरी जान बख्शे जैसे की तूने अपने इस मुसलमान भाई की कर्ज़ की जिम्मेंदारी लेकर उस्की जान छुडाई, कोई भी मुसलमान आदमी ऐसा नहीं है जो अपने मुसलमान भाई की तरफ से उस्का कर्ज़ अदा करे मगर ये की अल्लाह कयामत के दिन उस्को रिहाई देगा.

_शरहुस्सुन्ना, रिवायत का खुलासा | रावी अबू सईद खुदरी रदी.

4] उपर की दोनो रिवायते कर्ज़ अदा करने की एहमियत को खूब वाज़ेह व जाहिर करती है, जिस शख्स ने अपनी जान तक अल्लाह के रास्ते में कुरबान कर दी, उस्के उपर अगर किसी का कर्ज़ा है और देकर नहीं आया है तो वो माफ नहीं होगा, क्यूकी इस्का ताल्लुक बन्दो के हक से है. जब तक कर्ज़ख्वाह माफ ना करे उस वकत तक अल्लाह भी माफ ना करेगा. अगर आदमी देने की नियत रखता हो और मर जाए और दे ना सके, तो कयामत के दिन अल्लाह हक वाले को बुलाएगा और माफ करने के लिए उस्से कहेगा और उस्के बदले उसे जन्नत की नेमते देने का वादा करेगा तो हक वाला अपने हक को माफ कर देगा, लेकिन अगर किसी के पास अदा करने की ताकत है फिर भी उसने अदा नहीं किया और हक वाले को उस्का हक नहीं लौटाया, या दुनिया में उस्से माफ नहीं कराया तो उस्की माफी की कयामत में कोई सूरत नहीं.

_मुस्लिम, रिवायत का खुलासा | रावी अब्दुल्लाह बिन उमर रदी.

5] रसूलुल्लाहﷺ ने एक नए उमर का ऊंट किसी से कर्ज़ के तौर पर लिया, फिर आपﷺ के पास जकात के कुछ ऊंट आए तो आपने मुझे हुक्म दिया की उस आदमी को वो ऊंट दे दू ता मेंने कहा की इन ऊंटो में सिर्फ एक ऊंट है जो बहुत अच्छा है और सात साल का है तो आपﷺ ने फरमाया- वोही उसे दे-दो, इसलिये की बेहतरीन आदमी वो है जो बेहतरीन तरीके पर कर्ज़ अदा करता हो.

_मुस्लिम, रिवायत का खुलासा | रावी अबू राफे रदी.

6] आदमी के पास कर्ज़ अदा करने के लिए कुछ नहीं है और वो कहता है की जावो फला शख्स से ले लो, हमारी उस्के बीच बातचीत हो चुकी है वो अदा करने पर राज़ी है, तो कर्ज़ख्वाह को चाहिए की वो ये ना कहे में तो तुझी से लूंगा, में किसी और को क्यु जानू, बल्की उस्के साथ नरमी का मामला करे जिस्का वो हवाला दे रहा है उस्से वुसूल करे.

_बुखारी मुस्लीम, रिवायत का खुलासा | रावी अबू हुरैरा रदी.

7] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की जो लोगो का माल (कर्ज़

के तौर पर) ले और वो नियत उस्के अदा करने की रखता है, तो अल्लाह उस्की तरफ से अदा कर देगा, और जिस शख्स ने माल कर्ज़ के तौर पर लिया और नियत अदा करने की नहीं रखता तो अल्लाह उस शख्स को उस्की वजह से तबाह कर देगा.

_बुखारी, रिवायत का खुलासा | रावी अबू हुरैरा रदी.

8] “आबरू" के हलाल कर देने का मतलब ये है की जो शख्स कर्ज़ ले और कर्ज़ अदा करने की ताकत होने के बावजूद अदा ना करे तो उस्का ये जुर्म ऐसा है की सोसाइटी की निगाह में उस्को गिराया जा सकता है और उस्को सज़ा दी जा सकती है, अगर इस्लामी कानून किसी मुल्क में कायम है और वहा कोई ऐसा शख्स हो तो इस्लामी कानून के कारिन्दे उस्को सज़ा भी दे सकते है और उस्को बेइज्ज़त करने के दूसरे तरीके भी अपना सकते है.

_अबू दाउद, रिवायत का खुलासा | रावी शरीद सुलमी रदी.